माण्डना परम्परा एवं संबंधित लोक कथाएं

*नरेन्द्र कुमार मीना

अभिव्यक्ति हर मस्तिष्क के लिए आवश्यक है। संघर्षशील एवं अभावग्रस्त आदिमानव के गूहा भित्तियों पर उसके द्वारा बनायें गए शैल चित्र उसका उदाहरण है। मानव ने हमेशा से अपने आपको प्रकृति के मध्य विभिन्न रंगों, जीव–जंतुओं, पेड़–पौधों और प्राकृतिक दृश्यों के साथ पाया। रात्रि में चमकते चाँद–सितारे और दिन में सूर्य के प्रकाश से निर्मित परछाइयाँ तथा आकाश में वायु वेग से बादलों में बनने वाली विभिन्न आकृतियों, हाथी–घोडा तथा रेत के टीलों पर निर्मित लहर दार रेखाओं, समुद्र की लहरों इत्यादि को मानव अत्यंत कोतूहल से देखता रहा है।

सार

अभिव्यक्ति हर मस्तिष्क के लिए आवश्यक है। संघर्षशील एवं अभावग्रस्त आदिमानव के गूहा भित्तियों पर उसके द्वारा बनायें गए शैल चित्र उसका उदाहरण है। अभिव्यक्ति का यह रूप आज भी अनेक जन–जातियों के घरों में विभिन्न रूपों में देखने को मिल जाता है। राजस्थान के टोंक व सवाई माधोपुर क्षेत्र की मीणा महिलाओं के द्वारा अपने कच्चे घरों में बनाऐ गए माण्डने भी उसका एक रूप है जो पीढ़ियों से चली आ रही परम्परा का हिस्सा है। माण्डनों से जुड़ी कुछ लोककथाएं भी प्रचलित हैं जो इन महिलाओं को माण्डनों के लिए प्रेरित करती रहती है।

माण्डना परम्परा एवं माण्डनो से जुड़ी लोक कथाएँ

ईश्वर द्वारा रचित सुष्टि में मानव ही एक मात्र प्राणी है। जो विचारशील है, अर्थात विचार करने की शक्ति ही मानव को अन्य जीवों में विशिष्ठता प्रदान करती है। विचार मानव मस्तिष्क में उत्पन्न होते है। एक बार विचार उत्पन्न होने पर अभिव्यक्ति हेतु विचार छटपटाने लगता है।

सामान्यतः मानव विचारों की अभिव्यक्ति बोलकर, लिखकर एवं हाव–भाव के द्वारा करता है। चूंकि आदि मानव ने भाषा का आविष्कार नहीं किया था। वह लिखना व बोलना नहीं जानता था। हाव–भाव से भी वह अपने समस्त विचारों को अभिव्यक्त करने में असमर्थ था। इसलिये उसने चित्रों के माध्यम से अपने विचारों को अभिव्यक्ति किया। विचार अभिव्यक्त मानव के लिए कितना आवश्यक है, इसका अदांजा इस बात से लगाया जा सकता है। कि संघर्षशील एवं अभावग्रस्त आदिमानव ने भी चित्रों के माध्य से गुहा भित्तियों पर अपने विचार अभिव्यक्त किए।

मानव ने हमेशा से अपने आपको प्रकृति के मध्य विभिन्न रंगों, जीव–जंतुओं, पेड़–पौधों और प्राकृतिक दृश्यों के साथ पाया। रात्रि में चमकते चाँद–सितारे और दिन में सूर्य के प्रकाश से निर्मित परछाइयाँ तथा आकाश में वायु वेग से बादलों में बनने वाली विभिन्न आकृतियों, हाथी–घोडा तथा रेत के टीलों पर निर्मित लहर दार रेखाओं, समुद्र की लहरों इत्यादि को मानव अत्यंत कोतूहल से देखता रहा है।[1]

आदि मानव द्वारा चित्रित इन चित्रों को शैल चित्र के रूप में जाना जाता है। इन चित्रों की निर्मित हेतु उसने

सहज–सुलभ सामग्री जैंसे पत्थर, कोयला, खडिया, गेरू, खजूर की डण्डी से बनी कूची, जानवरों की चर्बी आदि का प्रयोग किया। समय के साथ मानव का विचार अभिव्यक्त हेतु उसने अन्य माध्यमों की खोज की।

विचार अभिव्यक्त का सशक्त माध्यम चित्रकला जिसकी शुरूआत आदि मानव कर चुका था। आज भी हमें विश्व के विभिन्न भागों में निवासरत आदिम जनजातियों के घरों में विकसित रूप में देखने को मिलते है।

भारत वर्ष के विभिन्न हिस्सों के वनांनचलों एवं ग्रामीण इलाकों में निवासरत जनजातियॉ आज भी कला की इस परम्परा को पीढ़ी–दर पीढ़ी आगें बडा रही हैं। भारत वर्ष के राजस्थान एवं मध्य प्रदेश की कुछ जन–जातियॉ कला की माण्डना शैली को पूरे मनोवेग एवं समपर्ण के साथ बनाती है। माण्डने बनाने का यह कार्य अधिकतर महिलाओं के द्वारा किया जाता है।

"Mandana are the most representative, most powerful creations a vigorous representation of spontaneous expression of meena women".[2]

राजस्थान के टोंक एवं सवाई माधेपुर क्षेत्र के ग्रामीण अंचलों में रहने वाली महिलाएं खूबसुरत एवं आकर्षक माण्डने में सिध्दहस्त है। वैसे तो देखने को इस क्षेत्र के गॉवों के कच्चे घरों में माण्डने वर्ष पर्यन्त में मिल जाते है। परन्तु दीपाली के अवसर पर तो प्रत्येक घर में माण्डने बनाने की जैसे हौड मच जाती है।

''क्षेत्र की महिलाओं के घर में त्यौहार, विवाह, आदि उत्सवों पर प्रवेश करने पर ऐसा प्रतीत होता है। मानों किसी कला–दीर्घी में कदम रखा हो। दहलीज से शुरूआत होती है। सौन्दर्य अलंकरण रूपी जादु विखेरने की जहॉ तक देखों वहॉ तक केवल रचनात्मकता दिखाई देती है।''[3] घर की कच्ची भित्तियों पर आँगन में चबूतरियों पर, चूल्हे पर, आलों में प्रत्येक जगह को माण्डनों से अंलकृत किया जाता है। माण्डने कच्चे घरों की भितियों एवं आँगन में गोबर एवं मिट्टी के लेपन के बाद खडिया एवं गेरू से बनायें जाते है। माण्डने अपने प्रभाव में रेखात्मक होते हैं। एवं इनमें सरल ज्यामितिक आकारों का प्रयोग होता है।

''मीणा महिलाऐं कठिन खेतीहर जीवन के बीच खाली समय निकालकर दीवार पर उकेरी गई आकृतियों में सौंदर्य एवं शक्ति को जीवतंता प्रदान करती हुई प्रतीत होती है। कलाओं से जुड़े भाव कल्पनाऍ इन महिलाओं को विरासत के रूप में प्राप्त हुए है। ये इन भावों एवं कल्पनाओं को स्वयं के तरीके से प्रस्तुत करती हुई निर्मिति का मौका ढुढँती है।''[4] इस क्षेत्र की महिलाऍ विभिन्न विषयों पर माण्डने बनाने में पारंगत है। जैसे–पशुओं में हाथी, शेर, बैल, एवं कुत्ते आदि। पक्षियों में मोर इनका पंसदीदा विषय है। इसके अलावा देवी–देवता, फूल–पत्तियों, स्वास्तिक, भैसों के खुर पाव, पगल्या, चोक आदि भी बनाए जाते है।

अब प्रश्न यह उठता है कि यें महिलाऍ जो पीढियों से इन माण्डनों को बडी तल्लीनता एवं समर्पण से बनती आ रही है। उसके पीछे कारण क्या है। एक प्रमुख कारण विचारों कि अभिव्यक्ति का ऊपर वर्ण किया जा चूका है। अन्य कारणों में मनोरंजन एवं सजावट भी है। एक प्रमुख कारण है – विश्वास। ये महिलाऍ माण्डनों को शुभता, सुख, एवं समृधि का प्रतीक मानती है। और इस विश्वास को बल मिलता है। माण्डनों से संबधित कुछ प्रचलित लोक कथाओं में एक कथानुसार आदि माता पार्वती को माण्डनों की जन्मदात्री माना जाता है।

''एक बार भगवान शिव ने माता पार्वती से कहा मैं नदी में स्नान करने जा रहा हूॅ। जब तक लौटकर आँउ आप घर के आंगन में सुन्दर माण्डना बना देना। भगवान शिव माता पार्वती को चेतावनी देते है कि मेरे आने से पहले अगर आपने माण्डना नही बनाया तो मैं हिमालय चला जाउॅगा ओर समाधि में लीन हो जाउॅगा। बदले में पार्वती जी ने शिव जी से वचन लिया कि अगर में माण्डना बनाती हूॅ तो आप पूरे विश्व में माण्डनों की परम्परा स्थापित करेंगें। पार्वती जी ने माण्डना बनाने हेतु कार्य प्रारम्भ किया। उन्होंने आँगन को गाय के गोबर से एवं मिट्टी से लिपा परन्तु

वे माण्डना बनाती उससे पहले भगवान शिव स्नान करके आ गऐ। अधुरा कार्य देखकर भगवान बहुत अप्रसन्न हुए। उन्हें सुन्दर एवं आकर्षक माण्डने देखने को नहीं मिले फलस्वरूप वे घर छोड़कर हिमालय पर जाने लगें।

पार्वती जी उनके पीछे भागी यह प्रार्थना करते हुए कि मुझे अकेला छोड़कर मत जाओ। जल्दबाजी में पार्वती जी ने गीले–लिपे हुए आँगन पर पॉव रख दिए फर्श पर उनके पदचिन्ह छप गए। शिवजी ने पीछे मुडकर देखा की पार्वती जी के पदचिन्ह जो अनजाने में फर्श पर छप गए थे। बहुत आकर्षक, फलों की तरह चमक रहें थे। इतने सुंदर जिनकी कल्पना भी नहीं कि थी। इस प्रकार पार्वती जी के द्वारा बनायें गये माण्डने पगल्या को देखने के बाद शिव जी ने घोषणा कि की आज से प्रत्येक घर में माण्डने बनाये जाएगें ओर ऐसे घरों में भगवान शिव हमेशा निवास करेगें। ऐसे घर हमेशा धन–धान्य से पूर्ण रहेंगे।''[5]

एक और प्रचलित कथा है। जो माण्डनों का संबंध धन की देवी लक्ष्मी जी से जोडती है। ''एक बार एक वृद्ध महिला अपनी बहू के साथ झोपडी में रहती थी। उस महिला की बहू बडी बुद्विमान थी। एक बार राज्य की महारानी झोपडी के पास बहने वाली नदी में स्नान करने आई। स्नान के लिए जाने से पहले रानी ने अपना नौलखा हार नदी के किनारे रख दिया। दुर्भाग्य से एक चील उस हार को अपनी चोंच में पकड़कर उड़ गई। थोड़ी देर उड़ने के बाद चील को वृद्ध महिला की झोपड़ी पर एक मृत सर्प दिखाई दिया। चील ने हार झोपड़ी की छत पर गिरा दिया एवं मृत सर्प को पकड़कर उड़ गई। हार खो जाने की बात रानी ने राजा को बताई। राजा ने सम्पूर्ण राज्य में घोषणा करवा दी कि जो भी व्यक्ति हार लाकर देगा राजा उसकी मुँह माँगी इच्छा पूरी करेगा।

वृद्ध महिला की बहू को वह हार घर की छत पर मिल गया। उसने हार उठाया एवं राजा को देने चली गई। बदले में राजा से ईनाम में यह मॉगा कि दीपावली के दिन उसका घर सम्पूर्ण राज्य में सबसे ज्यादा रोशनमय एवं सुसज्जित होना चाहिए महल से भी ज्यादा। ऐसा करना राजा के लिए कठिन था परन्तु उसे अपना दिया गया वचन निभाना था। दीपावली के अवसर पर झोपड़ी को हजारों दीपकों से रोशन किया गया एवं माण्डनों से अंलकृत किया गया।

मध्य रात्री को लक्ष्मी जी भ्रमण पर निकली लक्ष्मी जी को झोपड़ी की झिलमिलाहट भरी रोशनी एवं साज–सज्जा ने आकर्षित किया। लक्ष्मी जी एक पल रूकी एवं झोपड़ी का दरवाजा खटखटाया उस वक्त वृद्ध महिला की बहू घर के आँगन में माण्डना बना रही थी उसने तुरंत दरवाजा खोला एवं लक्ष्मी जी को अन्दर आने का अनुरोध किया। लक्ष्मी जी माण्डनों से सुजज्जित आँगन को देखकर अति प्रसन्न हुई एवं महिला को आर्शीवाद दिया कि जिस प्रकार से तुमने आँगन को माण्डनों से भर दिया है, तुम्हारा घर भी हमेशा सुख–समृद्धि से भरा रहेगा।''[6]

इस प्रकार की लोक–कथाएँ ग्रामीण महिलाओं में आज भी प्रचलित है जो इनकों माण्डने बनाने के लिए प्रेरित करती रहती है। इनके जीवन में माण्डनों का मतलब सुख–समृद्धि, धन–वैभव से है। इस प्रकार ये महिलाएँ वाहक है एक समृद्ध माण्डना परम्परा की।

***सहायक आचार्य**
चित्रकला विभाग
राजकीय महाविद्यालय खैरवाड़ा,
उदयपुर (राज.)

संदर्भ सूची

1. Vast and vision a journal of visual art 2015. Article Dr. Mani Bhartiya. Page no. 44.
2. मीणा मदन 'Art of meen community'

   अप्रकाशित शोध – प्रबन्ध राज. विश्वविद्यालय, 2005 जयपुर प्र. सं. 133।
3. National research journal of Humanities & Social sciences, vol 1. No.-2, July-Dec. 2013. Article Dr. Nidhi Meena, page No. 251.
4. National research journal of Humanities & Social sciences, vol 1. No.-2, July-Dec. 2013. Article Dr. Nidhi Meena, page No. 249.
5. लोक–कथा जैसा कि ग्राम गिरधरपुरा (सवाईमाधोपुर) की महिलाओं ने बताई।
6. लोक–कथा जैसा कि ग्राम गिरधरपुरा (सवाईमाधोपुर) की महिलाओं ने बताई।